प्रातःक्लास 19/6/68 ओमशांति पिताश्री अपन को आत्मा समझो।
ओमशांति। डबल ओमशांति भी कह सकते हैं। बच्चे भी जानते हैं और बाप दादा भी जानते हैं। ओमशांति का अर्थ ही है मैं आत्मा शांत रूप हूँ और बरोबर शांति के सागर, सुख के सागर, पवित्रता के सागर नम्बरवार कहना पड़ता है; क्योंकि पहले–2 है पवित्रता का सागर। पवित्र बनने में ही मनुष्यों को तकलीफ होती है और पवित्र बनने में ही बहुत ग्रेड्स हैं। हरेक बच्चा समझ सकते हैं, यह–यह ग्रेड्स बढ़ते जाते हैं। अभी हम सम्पूर्ण नहीं बने हैं। कहां न कहां कोई को किस प्रकार के(ी) कोई को किस प्रकार की डिफीकल्ट ज़रूर होती है। पवित्रता में है, योग में है। देह–अभिमान के बाद ही यह सभी डिफिकल्ट्स होते हैं। कोई में जास्ती कोई में कम डिफीकल्ट्स होते हैं; क्योंकि तुम हीरे बनते हो ना। अमूल्य रत्न बनते हो। जवाहरात में भी बहुत डिफेक्टेड्स होते हैं। किसम–2 के हीरे होते हैं। उनको फिर मैग्नेफाय ग्लास से देखा जाता है। तो जैसे बाप की आत्मा को समझा जाता है। वैसे आत्माओं बच्चों को भी समझना होता है यह रत्न है ना। रत्न भी सभी नमस्ते लायक हैं। मोती, माणक, पुखराज आदि–2 सभी नमस्ते लायक हैं; इसलिए सभी वैरायटीज़ डाले जाते हैं। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तो है ना। समझते हैं बेहद का बाप है, अविनाशी ज्ञान रत्नों का जवाहरी। वह एक ही है। जवाहरी भी उनको ज़रूर कहेंगे। ज्ञान रत्न देते हैं ना और फिर यह रथ भी जवाहरी। वही रत्नों के वैल्यु को जानते हैं। जवाहरों को बहुत अच्छी रीत मैंगनेफाय ग्लास से देखना होता है। इनमें कहां तक डिफेक्टेड हैं। यह कौन–सा रत्न है, कहां तक सर्विसएबुल है। दिल होती है रत्नों को देखने की। अच्छा रत्न होगा तो उनको बहुत ही प्यार से देखेंगे। यह बड़ा एक्सीलेंट है। इनको को तो सोने की डबली में रखना चाहिए। पुखराज आदि को सोने की डबली में नहीं रखा जाता। यह भी जैसे बेहद के रत्न बनते हैं। हरेक अपने दिल को जानते हैं। मैं किस प्रकार का रत्न हूँ। हमारे में कोई डिफेक्ट तो नहीं। जैसे जवाहरों को अच्छी रीत देखा जाता है वैसे हरेक को अपने को देखना है मेरे में कौन–सा डिफेक्ट है। वह होते हैं जड़ रत्न, जिनको चैतन्य मनुष्य को देखना पड़ता है। तुम तो हो ही चैतन्य रत्न। तो हर एक को अपन को ही देखना है। हम कहां तक सब्ज़परी, नीलम परी..... बने हैं। जैसे फूलों में भी कोई सदा गुलाब कोई गुलाब जैसुमन होते हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। हर एक अपन को अच्छी रीत जान सकते हैं। अपन को देखो हमने सारा दिन में क्या किया। बाबा को कितना याद किया। यह सभी बाबा ने कह दिया है, गृहस्थ व्यवहार में रहते हुये बाप को याद करना है। बाप ने भक्त को भी कहा, यह एक दृष्टांत दिया है। हम तो बच्चों को ही कहते हैं। यह तो समझते हैं भक्त कोई देवता बन नहीं सकते हैं। वह दृष्टांत है। तुम जो बच्चे हो एक–एक अपने को अच्छी रीत समझते हो। बाबा के साथ जिस बाप द्वारा हम हीरे बनते हैं उनके साथ हमारा लव कहां तक है। और कोई तरफ वृत्ति तो नहीं जाती है। कहां तक मेरा दैवी स्वभाव है। स्वभाव भी मनुष्य को बहुत सताता है। हरेक को तीसरा नेत्र मिला हुआ है, उनसे ही अपन को जांच करनी है, कहां तक मैं बाप की याद में रहता हूँ। कहां तक मेरी याद बाप को पहुँचती है। उनकी याद में रह रोमांच एकदम खड़ी हो जानी चाहिए; परंतु बाप खुद कहते हैं, माया के विघ्न ऐसे हैं जो इतना खुशी में आने में(ही) नहीं देती है। बच्चे जानते हैं, अभी हम सभी पुरुषार्थी हैं। रिज़ल्ट तो पिछाड़ी में ही निकलनी है। अपनी जांच करनी है। फिलो आदि अभी तुम निकाल सकते हो। एकदम प्योर डायमन बनना है। अगर थोड़ा भी डिफेक्ट होगा तो समझ जावेंगे हमारी वैल्यु भी कम होगी। रत्न है ना। बाप तो समझाते हैं, बच्चे सदैव पवित्र वैल्युएबुल हीरा बनना चाहिए। पुरुषार्थ कराने लिए, भिन्न–2 प्रकार से बाप समझाते हैं। (आज निष्ठा के टाइम बीच में बाद(प)–दादा संदली से उठकर सभी के बीच में चक्र लगाकर एक–2 बच्चों से नयन मुलाकात कर रहे थे) बाबा आज निष्ठा में क्यों उठा? देखने लिए कि कौन–2 सर्विसएबुल बच्चा है; क्योंकि कोई कहां, कोई कहां बैठे रहते हैं। तो बाबा ने उठकर एक–2 को देखा इनमें कौन–सी गुण है, इनका कितना लव है। सभी बच्चे सम्मुख बैठे हुये हैं। तो सभी

बहुत प्यारे लगते हैं; परंतु यह तो ज़रूर है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही प्यारे लगेंगे। बाप को तो मालूम है क्या–2 किसमें डिफेक्ट है। कोई न कोई डिफेक्ट है ज़रूर; क्योंकि जिस तन में बाप ने प्रवेश किया है वह भी अपनी जांच करते हैं। यह दोनों बाप–दादा इकट्ठे हैं ना। तो जितना–2 जो, औरों को सुख देते हैं, कोई को दुःख नहीं देते हैं वह छिपा नहीं रह सकता। गुलाब, मोतियां कब छिपा नहीं रह सकेगा। बाप सभी कुछ बच्चों को समझाकर फिर बच्चों को कहते हैं, मामेकं याद करो तो तुम्हारी खाद निकल जावेगी। याद करने समय सारे दिन में जो कुछ किया है वह सभी देखना है। मेरे में क्या अवगुण है जो बाबा के दिल पर इतना नहीं चढ़ सकते हैं। दिल पर सो तख़्त पर। तो बाप उठकर बच्चों को देखते हैं। हमारे तख़्त के वासी कौन–2 बनने वाले हैं। जब समय नज़दीक आता है तो बच्चों को झट मालूम पड़ जाता है, हम कहां तक पास होंगे। नापस होने वाले को तो पहले ही से मालूम पड़ जाते(ा) है कि हमारे मार्क्स कम होंगी(गे)। तुम भी समझते हो हमको मार्क्स तो मिलनी ही है। हम स्टूडेन्ट्स हैं किसके? बाप के। जानते हो बाप दादा द्वारा पढ़ाते हैं। तो कितनी खुशी होनी चाहिए बच्चों को। बाबा हमको कितना प्यार करते हैं। कितना मीठा बाबा है। तकलीफ़ तो कोई देते नहीं सिर्फ़ कहते हैं, इस चक्र को याद करो। पढ़ाई को... जास्ती नहीं है। एमऑबजेक्ट सामने खड़ा है। ऐसा हमें बनना चाहिए। दैवी गुणों की एमाऑबजेक्ट है। सन्यासी तो दैवी गुणों को जानते ही नहीं। सन्यासी कब उन्हों के आगे नहीं कहेंगे, आप सर्वगुण सम्पन्न.... हम नीचे पापी..... बिल्कुल ही नहीं कहेंगे। तुम तो झट कहेंगे। सन्यासी क्या जाकर करेंगे; इसलिए सन्यासियों के लिए निषेध है। तुम बच्चे जानते हो हमको दैवी गुण धारण कर इन जैसा पवित्र बनना है। तब ही माला में पिरोये जावेंगे। बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। खुशी होती है बाबा ज़रूर आप समान पवित्र, नॉलेजफुल बनावेंगे। इसमें पवित्रता सुख–शांति सभी आ जाती है। अभी कोई भी परिपूर्ण नहीं बने हैं। अंत में बनना है। इसके लिए पुरुषार्थ करना है। बाप को तो सभी प्यार करते हैं। बाबा कहकर तो दिल ही ठहर जानी चाहिए। बाप से वर्सा कितना भारी मिलता है। सिवाय बाप के और कहां भी दिल नहीं जावेगी। बाप की याद ही बहुत सतानी चाहिए। बाबा। बाबा। बाबा। बहुत ही प्यार से बाबा को याद करना होता है। राजा का बच्चा होगा तो उनको राजाई नशा रहता होगा ना। अभी तो राजाओं का मान न रहा है। जब ब्रिटिश गवर्मेन्ट थी तो इन्हों का बहुत ही मान था। सभी उनको सलाम करते थे, सिवाय वायसराय के। बाकी सभी नकन(ल) करते थे राजाओं को। अभी उन्हों की क्या गति हो गई है। क्या उन्हों की बुद्धि में है। यह भी तुम जानते हो यह आकर राजाई पद लेंगे। नहीं। बाबा ने समझाया है मैं ग़रीब निवाज़ हूँ। वह झट बाप को जान लेते हैं। समझते हैं यह सभी कुछ उनका है। उनके श्रीमत पर ही हम सभी कुछ करेंगे। उन्हों को तो अपने धन का नशा रहता है; इसलिए वह ऐसे कर न सके; इसलिए बाप कहते हैं, मैं हूँ ही ग़रीब निवाज़। बाकी हाँ, बड़ों को उठाया जाता है; क्योंकि बड़ों के कारण फिर ग़रीब भी झट उठावेंगे। देखेंगे इतने बड़े–2 लोग इन्हों के पास जाते हैं तो हम भी क्यों न जावें। यहां तुम्हारे पास ग़रीब बहुत आवेंगे। वह बिचारे तो डरते हैं। कोई अछूत आ जाये, कोई गंदा भी आ जाये तो हंगामा हो जाये। एक दिन अछूत भी तुम्हारे पास आवेंगे। जैसे प्रदर्शनी में फिमेल्स के लिए अलग टाइम रखा है ना। तो एक दिन अछूतों का भी दिन रखेंगे फिर उन्हों को तुम जब समझावेंगे तो बड़े ही खुश होंगे। एकदम चटक जावेंगे। उन्हों के लिए तुम खास टाइम रखेंगे। बच्चों के दिल में आता है हमको तो सभी का उधार(उद्धार) करना है। सबसे ग़रीब है अछूत। वह भल आये। वह भी तो पढ़कर एम. एल. ए. बनते हैं। तुम हो ईश्वरीय मिशन। तुमको सभी का उधार(उद्धार) करना है। गायन भी है ना। भीलनी के बैर खाई.... भीलनी अगर स्वच्छ हो जाये तो क्या उनके हाथ का खावेंगे नहीं। विवेक भी कहते(ा) है दान हमेशा ग़रीबों को किया जाता है। साहूकार को नहीं। तुमको आगे चल यह सभी कुछ करना है। इस योग का बल ज़रूर चाहिए जिससे वह कशिश में आये।

योगबल कम है; क्योंकि देह अभिमानी हैं। हरेक अपने दिल से पूछे हमको कहां तक बाप की याद है। कहां हम फंसते तो नहीं हैं। अभी टाइम तो बहुत है। ऐसी अवस्था चाहिए जो किसको भी देखने से चलायमान न हो। यह हमारा भाई है। बाबा का फरमान है देह अभिमानी मत बनो। सभी को अपना भाई–2 समझो। आत्मा जानती है हम भाई–2 हैं। देह के सभी धर्म छोड़नी है। अंत में अगर कुछ भी याद पड़ा तो दण्ड पड़ जावेगा। इतनी अपनी अवस्था मज़बूत बनानी है और सर्विस भी करनी है। अंदर में समझना है ऐसी अवस्था जब बनावेंगे तब ही यह पद मिल सकता है। बाप तो अच्छी रीत समझाते हैं। बहुत सर्विस रही हुई है। तुम्हारे भी बल होगा तो उनको कशिश होगी। अनेक जन्मों की कट लगी हुई है ना। यह ख़्यालात तुम ब्राह्मण बच्चों को ही रखनी है। सभी के आत्माओं को पावन बनाना है। मनुष्य तो नहीं जानते हैं। यह भी तुम जानते हो सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप सभी बातें समझाते रहते हैं। अपनी जांच करनी है। जैसे बाबा बेहद में खड़े हैं बच्चों को भी बेहद का ख़्याल करना है। बाप का आत्माओं में कितना लव है। इतना दिन लव क्यों नहीं था; क्योंकि डिफेक्टेड थे। पतित आत्माओं को क्या लव करेंगे। अभी बाप सभी को पतित से पावन बनाने आये हैं। तो लवली ज़रूर बनना पड़ता है। बाबा तो है ही लवली। बच्चों को बहुत कशिश करते हैं। दिन–प्रतिदिन जितना पवित्र बनते जावेंगे तुमको बहुत कशिश होगी। बाबा में बहुत कशिश होगी। इतना खैंचेंगे तो तुम ठहर न सकेंगे। तुम्हारी अवस्था नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ....से आ जावेंगे। यहां बाप को देखते रहेंगे तो बस समझेंगे अभी जाकर बाबा से मिलें। ऐसे बाबा से फिर कब बिछुड़ेंगे नहीं। बाप को फिर कशिश होती है बच्चों की। इस बच्चे की तो कमाल है। बड़ी अच्छी सर्विस काते(करते) हैं। हां कुछ डिफ़ेक्ट भी है। फिर भी अवस्था अनुसार, टाइम अनुसार बड़ी अच्छी ही सर्विस करते हैं। कोई दुःख देने जैसे आदमी देखने में नहीं आते हैं। बीमारी आदि होती है तो वह है कर्म–भोग। खुद भी समझते हैं जब तक यहां हैं कुछ न कुछ होता रहेगा। भल यह रथ है। फिर भी कर्मभोग तो पिछाड़ी तक भोगना ही है। ऐसे नहीं कि मैं इनमें आशीर्वाद करूँगा। इनको भी अपना पुरुषार्थ करना है। हाथ रथ दिया है इसके दो पैसा दे देंगे। बहुत बांधेलियाँ कैसे–2 आती हैं, कैसे युक्ति से छूट कर आती हैं। उनका जितना लव रहता है और कोई का उतना नहीं। बहुतों का लव बिल्कुल नहीं है। उन बांधेलियों के लव से तो किसके भी लव से भेंट नहीं कर सकेंगे। बांधेलियों का योग भी कोई कम नहीं समझना। बहुत याद में रोती हैं। बाबा ओ बाबा कब हम आपसे मिलेंगे। बाबा, विश्व का मालिक बनाने वाले बाबा आप से हम कैसे मिलेंगे। ऐसी–2 बहुत बांधेलियाँ हैं जो प्रेम की(के) आँसू बहाती रहती हैं। वह उनके दुःख के आँसू नहीं हैं। वह आँसू प्यार के मोती बन जाते हैं। तो बांधेलियों का योग कोई कम थोड़े ही है। याद में बहुत तरफती(तड़पती) हैं। दुःख मिटाने वाले बाबा। बाप कहते हैं, जितना समय तुम याद में रहेंगे, सर्विस भी करेंगे। भल कोई बंधन में रहते हैं, खुद सर्विस नहीं कर सकते हैं; परंतु याद का भी बहुत बल मिलता है। याद में ही सभी कुछ समाया हुआ है। तरफ्ती(तड़पती) रहती हैं। बाबा कब मौका मिलेगा जो हम आप से मिलेंगे। कितना याद में रहते हैं। आगे चल दिन–प्रतिदिन तुमको ज़ोर से खैंच होती रहेगी। स्नान करते, काम–काज करते याद में ही रहेंगे। बाबा कब वह दिन आवेगा, जो बंधन खलास होंगे। बिचारी पूछती रहती हैं। बाब(ा) यह हमको बहुत तंग करते हैं। क्या करें? बच्चों को मार सकते हैं? पाप तो नहीं होगा? बाप कहते हैं, आ(ज)कल के बच्चे तो बिच्छू–टिण्डन ऐसे हैं जो बात मत पूछो। किसको पति से दुःख होता है तो अंदर में सोचते हैं कहां यह बंधन टूट जायें तो हम बाबा से मिलें। बाबा, बहुत कड़ा बंधन है। क्या करें? पति का बंधन कब छूटेगा? बस बाबा, बाबा, बाबा ही करती रहती हैं। उनकी कशिश तो आती है ना। क्या करें। सरकार के कायदे भी बहुत हैं। विघ्न तो बहुत डालते हैं ना; इसलिए बुलाया जाता है बड़े–2 आदमियों को। फिर समय पर कब उन से काम लेना होता है। बिचारी अबलाएं कितनी मार

खाती हैं। कितना सहन करती हैं। तुमने शुरू में इतनी मारें नहीं खाई हैं जितनी कि अभी खाती हैं। तुमको करके दसतालगाया। चमाट मारी होगी। बस ना। ऐसे तो नहीं कोई की हड्डी तोड़ डाली। नहीं। अभी तो क्या–2 कर देते हैं। शुरू से लेकर विकार की बात पर ही हंगामा होता आया है। यह भी तुम समझते हो बाबा ने कैसी युक्ति रची सभी को कहा चिट्ठी लेकर आओ। ऐसे तो कब गुरु लोग नहीं कहते हैं। अभी तुमको ज्ञान मिला है। वह समझते हैं यह लोग भक्ति को मानते ही नहीं हैं। शास्त्रों को मानते ही नहीं। तब ही बाबा ने समझाया था तुमको कहे शास्त्रों को नहीं मानते हो? बोलो, तुम तो मूर्ख हो। जितना हम शास्त्र पढ़े हैं उतना फिर और कोई ने नहीं पढ़ी(ढ़े) होगी(होंगे)। हमने जितना(ी) भक्ति की है उनती कोई ने नहीं की होगी। हम एक्युरेट टाइम बताते हैं। आज से 2500 वर्ष हुये हमको भक्ति करते। हमने जन्म–जन्मांतर शास्त्र आ(ि)द पढ़ी(ढे) हैं। तुमने भी इतनी भक्ति नहीं की होगी। हम तो सभी को जानते हैं। हम तुम्हारे जन्मों को भी जानते हैं। सृष्टि चक्र के आदि–मध्य–अंत को भी जानते हैं। ऋषि–मुनि आ(ि)द कुछ नहीं जानते थे। वह भी नास्तिक थे। बाप के भी बायोग्राफी को जानते हैं। इतना नशा रहना चाहिए। दिमाग से बात करनी चााहिए। पहले तो अपनी अवस्था को ही देखना है। कोई छी–2 खाद तो हमारे में नहीं है। हरेक समझते तो हैं ना। 6/8 प्रकार का विकार होता है। आँखों का भी कितना धोखा होता है। बूढ़े भी कहते हैं, हम स्त्री को देखता हूँ तो बुद्धि चलायमान होती है। बाप कहते हैं तुम देह अभिमान में हो तब ही चलायमान होते हो। इसमें पाप नहीं है; परंतु यह भी न होना चाहिए। तुम कर्म इन्द्रियों से नहीं करते हो तो पाप नहीं है। कर्म इन्द्रियों से ऐसा कुछ काम किया तो पाप बन पड़ेगा। वास्तव में तुमको देखना भी है आत्मा को। और सभी बातें उड़ जायें। हम जानते हैं कि हम सभी आत्मा भाई–2 हैं। तुम बच्चों को भी समझाया जाता है। सभी भाई–2 हैं। हमारा वह बाबा है। यह कौन–सा बाबा है? आत्माओं का बाबा है या देह का बाबा है? यह है आत्माओं का बाप। जो हमारा बाप भी है, टीचर भी बना है, गुरु भी बना है। वण्डर है ना। लौकिक सम्बन्ध में बाप, टीचर, गुरु सब अलग–2 होते हैं। टीचर्स भी तुम कितने करते हो। वह भी व्यभिचारी हो गया ना। यहां तो एक ही है, बाप एक ही अविनाशी टीचर है। नहीं तो बुद्धि तीनों तरफ जाती है। यहां तो बुद्धि में एक ही याद रखनी है। यह तो समझते हैं नम्बरवार है। कोई की बुद्धि में अच्छी रीत बैठता है। कोई की बुद्धि में बिल्कुल बैठता ही नहीं। तुम बच्चे अभी पुरानी दुनियाँ से नई दुनियाँ में जाने कर पुरुषार्थ करते हो। जानते हो फूलों का गार्डेन स्थापन होना ही है। बाकी उसमें ऊँच पद पाने लिए पुरुषार्थ करना है। बहुत बेहद का पुरुषार्थ करना है। कहते हो हम नर से नारायण बनेंगे तो बस एक बाप को ही याद करते रहो। बस, बाबा ओ बाबा मीठे बाबा। आपसे हमको वर्सा मिलता है अभी आप आये हो हमको ले जाने लिए अभी हमारा पार्ट पूरा होता है। सभी चले जावेंगे मुक्तिधाम। बाकी जो राजयोग सीखेंगे वही राजाई में जावेंगे। ओम। बाप कहते हैं देहली में खूब घेराव डालो; क्योंकि देहली राजधानी है ना। हमेशा राजधानी पर ही घेराव दिया जाता है। तुम देहली पर घेराव डालो। बड़े–2 म्यूज़ियम खोलो। सिर्फ़ मकान का फैसला करो। बाबा को लिखो बाबा कुआँ से पैसा भेज दो। काम तो तुम बच्चों को करना है। देहली कैपीटल को हाथ किया तो सभी हाथ आ जावेंगे। मकान रॉयल लो। 4–6–8 म्यूज़ियम खोलो। बाबा मना नहीं करते हैं। खोलो ऐसे भभके से। भल कोई भी मदद न देवे। बाबा कहते हैं, मैं सांवलशाह हूँ। कल्प पहले भी बना था। यह सभी ड्रामा में नूँध है। तुम बिल्कुल बेफ़िक्र रहो। घेराव डालते रहो। होगा सब ड्रामाप्लैन अनुसार। फर्स्ट क्लास सेन्टर खोलो किर(ाया) पर। फिर बहुत ढेर तुम्हारे पास आवेंगे। पूछेंगे खर्चा कैसे चलता है? कहां से आता है? अरे, जो बादशाही करेंगे वही खर्चा निकालेंगे ना। जो ब्राह्मण देवता बनने वाले हैं खर्चा भी वही करेंगे। शिवबाबा तो बादशाह नहीं बनते हैं। हम बनते हैं पैसा भी हम खर्चा करते हैं। ब्राह्मण ही देवता बनते हैं खर्चा भी तो वही करेंगे ना। अच्छा ओम।